Vol 6 Issue 3 Dec 2016

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.........

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.ror.isrj.org

Review Of Research

ISSN: 2249-894X   Impact Factor : 3.8014(UIF)   Volume - 6 | Issue - 3 | December - 2016

श्रीमद्भगवद्गीता मे निहित सांस्कृतिक मूल्यों का समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ॰ राहुल
पीएच॰ डी॰ समाजशास्त्र

प्रस्तावना–

भारतीय संस्कृति सनातन संस्कृति है । सम्पूर्ण मानवता के कल्याण के समस्त सूत्र इस संस्कृति की मूलधारा में ओतप्रोत हैं। जीवन के प्रत्येक पहलू को अद्भुत रूप से आनन्द निमग्न होकर जीने की कला इस संस्कृति की पहचान है । वेद भारत के आधार ग्रन्थ है । भारतीय संस्कृति वेदमूलक संस्कृति है । इस गौरवमयी परम्परा का आधार यजुर्वेद में प्राप्त होता है जहां इसे विश्व की प्रथम तथा वरण करके योग्य संस्कृति बताते हुए कहा गया है–

सा संस्कृति प्रथमा विश्ववारा[१]

ब्राह्मणग्रन्थों, स्मृतिग्रन्थों, उपनिषदों से लेकर श्रीमद्भगवद्गीता पर्यन्त इसी उज्ज्वल सांस्कृतिक धारा का प्रवाह दृष्टिगोचर होता है। आध्यात्मिकता के जल से इस पावनी संस्कृति का पल्लवन हुआ है। बृहदारण्यकोपनिषद् डिण्डिमघोष करते हुए सन्देश देती है– आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः श्रोतव्य मन्तव्यो निदिध्यासितव्यो मैत्रेयि ।[२]
यहाँ पर महर्षि याज्ञवल्क्य ने आत्मा के दर्शन, श्रवण, मनन तथा निदिध्यासन पर विशेष जोर दिया है । जब तक व्यक्ति आत्मालोचन नहीं करके जीवन यापन करेगा तब तक संसार में त्रासदी बनी रहेगी यह शाश्वत सत्य है । वर्तमान विश्व में आत्मचिन्तन का निरन्तर ह्रास हो रहा है– जिसका दुष्प्रभाव सबके समक्ष है ।

भारतीय मनीषियों के इस दिव्य चिन्तन को भगवान कृष्ण ने सम्पूर्ण रूप से अपनी दिव्य वाणी में श्रीमद्भगवद्गीता में प्रस्तुत किया है । गीता की इस दिव्यता का गान स्वयं श्रीकृष्ण गीता के अठारहवें अध्याय में करते हैं –

इति ते ज्ञानमाख्यातं गुह्याद्गुह्यतरं मया ।
विमृश्यैतदशेषेण यथेच्छसि तथा कुरु ।।[३]
सर्वगुह्यतमं भूयः शृणु मे परमं वचः ।
इष्टोऽसि मे दृढमिति ततो वक्ष्यामि ते हितम् ।।[४]

गीता की इस सकल जगत्कल्याणकारिणी अमोघा वाक् के कुछ दिव्य अमृत कण यहाँ प्रस्तुत हैं–

वर्णाश्रम व्यवस्था :

भगवान् कृष्ण ने मानव समाज की सहज प्रवृत्ति का अनुसन्धान करके गीताशास्त्र में चातुर्वर्ण्य धर्म की प्रतिष्ठा की है–

चातुर्वर्ण्यं मयासृष्टं गुणकर्म विभागशः ।
तस्य कर्त्तारमपि मां विद्धय कर्त्तारअव्ययम् ।।[५]

यहाँ श्रीकृष्ण ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र के रूप में वर्णाश्रम धर्म की प्रतिष्ठापना करते हैं । वर्तमान समय में चातुर्वर्ण्य संस्कृति का विलोप हो गया है और उसका स्थान जाति व्यवस्था ने ले लिया है । इससे समाज में निरन्तर कटुता, वैमनस्य एवं अविश्वास का वातावरण बना हुआ है । वस्तुतः प्राचीन भारत में शिक्षा काल में ही विद्यार्थी के ज्ञान, शौर्य, व्यवहार एवं सेवा के भाव का आंकलन करके उसके वर्ण की उद्घोषणा की जाती थी। यह एक अद्भुत सांस्कृतिक महायज्ञ था और इससे सम्पूर्ण प्रजा में समदृष्टि और संसृष्टि का भाव निरन्तर बना रहता था । आज भी समाज में वर्णाश्रम परम्परा की इस दिव्यज्ञान मुथक्ति माला की पुनः प्रतिष्ठापना होनी चाहिए ।

यज्ञिय संस्कृति :

गीता में यज्ञिय संस्कृति का महिमा गान किया गया है । यज्ञ केवल अल्पकालिक कर्मकाण्ड का नाम नहीं है । यज्ञ वस्तुतः एक जीवन पद्धति है जिसमें मनुष्य स्वार्थ भाव का परित्याग करके परमार्थ भाव को अपनाता है । गीता में प्रत्येक कर्म यज्ञियकर्म बनाने का उपदेश है–

यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबन्धनः ।
तदर्थं कर्म कौन्तेय मुक्तसैं समाचार ।।[६]

गीता का स्पष्ट कथन है कि आदिकाल में स्वयं प्रजापति ने प्रजा को उपदेश दिया कि तुम यज्ञिय कर्म का विस्तार करो और यह यज्ञ तुम सब को इच्छित भोग प्रदान करने वाला सिद्ध होगा–

सहयज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापतिः ।
अनेन प्रसविष्यध्वमेष वोस्त्वि ष्टकामधुक् ।।[७]

समस्त प्रकृति भी इस यज्ञिय आदान प्रदान से अनुगृहीत होती है और परस्पर स्वार्थ परित्याग पूर्वक कर्मानुष्ठान की इस दिव्य सनातनी परम्परा के परम्परा सबका कल्याण होगा –

देवान्भावयतानेन ते देवा भावयन्तु वः ।
परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ ।।[८]

यज्ञिय परम्परा को सर्वोत्तम मानते हुए श्रीकृष्ण कहते हैं कि यज्ञ से अवशिष्ट अन्न को ग्रहण करने वाले के सभी पाप नष्ट हो जाते हैं और जो इस महान कर्त्तव्य परायणता का त्याग करके स्वार्थ का जीवन जीते हैं वे वस्तुत पाप के ही भागी है –

यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्विषैः ।
भु×जते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात् ।।
गीता ३/१३

वर्तमान विश्व की असंख्य समस्याओं का समाधान गीता की इस यज्ञिय संस्कृति में सन्निहित है ।

दैवासुरसम्पद् :

श्रीमद्भगवद्गीता के सोलहवें अध्याय में सामाजिक प्रवृति का अनुसन्धान किया गया है । श्रीकृष्ण यहां कहते है कि दिव्यता जीवन का परम धर्म है । दैवी प्रकृति व्यक्ति को मुक्ति मार्ग की दिशा में अग्रसर करती है और आसुरी प्रकृति व्यक्ति को बन्धन का राह दिखाती है –

दैवीसम्पद्विमोक्षाय निबन्धायासुरी मता ।
माशुचः सम्पदं दैवीमभिजातोऽसि पाण्डवा ।। [९]

दैवी सम्पद् का विस्तार से वर्णन करते हुए श्रीकृष्ण कहते हैं कि अभया चित्त की प्रसन्नता और निर्मलता, तत्त्वज्ञान की साधना, दम, दान, यज्ञ, स्वाध्याय, तप और अन्तःकरण की सरलता दैवी सम्पद् के प्राथमिक लक्षण है –

अभयं सत्त्वसंशुद्धिज्ञनियोगव्यवस्थितिः ।
दानं दमश्च यज्ञश्च स्वाध्यायस्तप आर्जवम् ।। [१०]

आगे श्रीकृष्ण अहिंसा, सत्य, अक्रोध, त्याग, शान्ति, निन्दा न करना, दया, अलोभ, कोमलता, लज्जा और अचपलता को भी इसी में सम्मिलित करते हैं–

अहिंसा सत्यमक्रोधः त्यागः शान्तिरपैशुनम् ।
दया भूतेष्वलोलुप्त्वं मार्दवं हीरचापलम् ।। [११]

गीताकार ने यहाँ पर अन्य श्लोकों में भी विस्तार से दैवी सम्पदा का विवेचन किया है । इसके बाद वे दर्प, दम्भ, अभिमान, क्रोध, अज्ञान, कठोरता आदि आसुरी सम्पदा का वर्णन करते हैं। [१२]

श्रीकृष्ण का कथन है कि जब तक समाज में दैवी प्रकृति का विस्तार तथा आसुरी प्रकृति का क्षरण नहीं होगा तब तक सामाजिक विषमता समाप्त नहीं हो सकती । वर्तमान युग में यह सर्वत्र दृष्टिगोचर हो रहा है ।

गीता वस्तुतः सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और जीवन उन्नयन करने वाले दिव्यों तत्त्वों का प्रतिपादक महाग्रन्थ है । इसके अध्ययन, मनन और चिन्तन सांस्कृतिक त्रिवेणी को प्रवाहित करेगा समाज में समरसता पूर्ण वातावरण का विस्तार किया जा सकता है और यही वर्तमानयुग की महती आवश्यकता है ।

संदर्भ सूची :

१.यजुर्वेद
२.बृहदारण्यकोपनिषद्, ४/५/६
३.गीता, १८/६३
४.वही, १८/६४
५.वही, ४२१३
६.वही, ३/६
७.वही, ३/१०
८.वही, ३/११
९.वही, १६/५
१०.वही, १६/१
११.वही, १६/२
१२.वही, १६/४

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-
413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com